तीजनबाई की खोज हमें छत्तीसगढ के आंतरिक हिस्सेतक ले गयी। सुनसान विराने में हमारी गाडी की आवाज अजीब सी लग रही थी। एक बाजू स्मशानभूमी, दुसरी और नदी का बहता पानी और बीचोबीच तीजन एक छोटेसे मंदीर में देवी का व्रत कर रही थी। वह सावली मूर्ती मेरे सामने मुस्कराकर खडी थी। सभी लोग उन्हे 'अम्मा'कहते है। उनके व्यक्तित्व में मिट्टी की सोंधी महक है। गाँव - घर की बेटी की सरलता है। उनकी जिव्हा पर छत्तीसगढी लोकगीतों कें झरने बहते है।

चोला मोर माटी हे ना

काया मोर माटी हे ना

भाई,बंधु, कुटुंब,कबीला

जियत भर के साथी हे ना।

पंडवानी में तीजनबाई नें बहुत खूबी सें लोकगींतों को तरल भाव से गाकर अपने मिट्टी को सम्मान दिया है।

पंडवानी का जन्म तथा विकास छत्तीसगढ में हुआ। महाभारत के प्रमुख पात्र पांडु कें पाँच पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव माने जाते है। पांडवों की वाणी याने पंडवानी। पंडवानी में भीमसेन नायक है। पंडवानी गायकी, कथा-वाचन तथा अभिनय के साथ पेश की जाती है। पंडवानी की किस्सागायकी और संगीत की अनोखी जुगलबंदी दर्शकों को मोहित कर देती है।

प्रश्न : तीजनबाई को पूछा की पंडवानी में भीमसेन नायक है। पंडुराजा के पुत्रों की यह कथा है। पंडवानी का उगम और प्रसार कैसे हुआ ?

तीजनबाई : पंडवानी की प्रथा रावण झीपन गाँव से शुरु हुई। वहाँ मामा-भाँजा पण्डवानी गाते थे। यह प्रथा बहुत पहले सें आई। हमारे बुजुर्गों ने हमे यह बात बताई है। मामा का नाम नारायण था। ऐसा हुआ की गाँव गाँव में चोरी हुआ करता था।

मामा-भांजा रात को पंडवानी सुनाते थे और गाँव में चोरी होती थी। इसलिये रायपुर में उन्हें पकड लिया। जहाँ तू जाता है वहा चोरी कर लेता है। चोर को तू साथ लेकर जाता है उनपर ऐसे आरोप लगाए और बंद कर दिया। बेचारे जेल चले गये। उसके बाद जेलर बदल गया। नये जेलर नें पूछा- यह लोग क्यों यहा जेल में आये ? अन्य

लोगों नें बोला- यह गाँव गाँव चोरी करता है। पंडवानी गाता है और चोरी करता है। जहा जाता है, वहाँ चोरी होती है। यह लोग चोर के साथी है।

जेलर बोला, "चोर के साथी है और पंडवानी गाते है? कैसे गाते है ? सुनाओ हमको।"

मामा-भांजा बोले, "महाराज हमारी खंजेरी और तंबोरा लाव दे। तो हम भी सुनाते। "

वो क्या किया। जेलर ने पोलीस को रावण झीपन गाव में भेजा और खंजेरी, तंबुरा और करतायल लेकर पुलिस लोग आये। मामा भांजे ने अभिमन्यू वध किया और सभी लोग रोने लगे। जेलर भी फूटफूटकर रोने लगा। जेलर बोला, "इनकी कथा की बंधन में लोग बव्द्ध हो जाते है और गाँव मे चोरी होती है इसमे मामा- भांजे का कोई कसूर नहीं। इनको रिहा किया जाय।" मामा-भांजे को छुट्टी मिली। और उनसे लिखा के लिया की कार्यक्रम दिन में देना। रात को नहीं देना। उन्ही कें चेले चपाटे हमारे नाना लोग। उन्होंने हमारे नाना लोग को सिखाया और नाना नें हमको सिखाया। हमने सारे संसार को यह कथा सुनाई।

प्रश्न : पंडवानी की वेदमती शैली और कापालिक शैली में क्या फर्क है ?

तीजनबाई : पंडवानी की कथाएँ भीतर ही भीतर गूढ अर्थों से भरी पूरी है। मेरी दृष्टि सें मूल रुप से अन्याय पर न्याय की जीत और असत्य पर सत्य की विजय गाथा है पंडवानी।

वेदमती और कापालिक शैली में अंतर बताना बहुत कठिन है। सामान्यत: कापालिक विधी द्वारा मंच पर खडे होकर पण्डवानी गायन किया जाता है जब कि पंडवानी की वेदमती शैली में मंचपर व्यासगद्दी पर बैठकर पंडवानी प्रस्तुती की जाती है। वेदमती शाखा कें लोग पौराणिक ग्रंथानुसार कथा प्रस्तुत करते है। कापालिक शाखा के लोग कथा में किंचित कल्पना कें रंग भरते है।

प्रश्न : पंडवानी का नायक भीमसेन है और पंडु के पाँच पुत्रों की वाणी यह पंडवानी है। पंडवानी में स्त्रियों का कैसा महत्व है ? क्या यह स्त्रियाँ शोषण का प्रतीक हैं ? इन स्त्रियों में आपस में कैसा रिश्ता था ?

तीजनबाई : यह बात सही है की पंडवानी हमारे संस्कृती की धरोहर है और हमारी संस्कृती पुरुषप्रधान है। जब मै पंडवानी गाती थी तो शुरुआत में, लडकी होकर पंडवानी

गायन करना सबको अजीब लगता था। मुझे लोग पगली बोलते थे। लोग मजाक उडाते थे।

पंडवानी कथाएँ भीतर ही भीतर गूढ अर्थों से भरी पूरी है। व्यक्ती, परिवार और समाज को दिशा देनेवाली यह कथाएँ है। स्त्री पुरुष के भेद से उपर उठानेवाली तरलता इन कथाओं में नजर आती है।

पंडवानी में स्त्री-पुरुषों के बीच और स्त्रियों के बीच के सम्बंध परिपक्वता से खिले है।

माद्री और कुंती में बहुत प्यार था। गांधारी और कुंती में भी बहुत स्नेह था। गांधारी को १०० पुत्र थे और कुंती को केवल पाँच। लेकिन यह बात उनके स्नेह में बाधा नही आयी।

माद्री को बेचारी को मातृसुख नहीं मिला। पाण्डु को श्राप मिला था ना., वो रती भोग नही कर पाया। माद्री नकुल सहदेव की माता बनी लेकिन निभा नही सकी बेचारी। इन पुत्रों को वह कुंती के हाथ सौंप देती है। और बोलती है, जैसे तुम्हारे पुत्रों का तुम पालन करोगी वैसेही इन पुत्रों का पालन करना। तो कुंती कहती है की मेरे पुत्रों को मै कम देखूंगी और तुम्हारे पुत्रों को ज्यादा देखूंगी। क्यों की उनके पिता-माता दोनों नही है। और मेरे तीन पुत्रों को पिता नही है लेकिन मै माता तो हूँ मेरे पुत्र सें बढकर आपके पुत्रों की मैं ज्यादा देखभाल करुंगी। कुंती ने वही किया। नकुल, सहदेव पर बेहद प्यार किया। इतना प्यार युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन पर भी नहीं किया। नारी की ताकत यही है। प्यार करना, निस्वार्थ प्यार करना यह नारी की शक्ती है और यह शक्ती बारबार पंडवानी में प्रतीत होती है। पुत्र प्यार करे या ना करे, परिवार साथ दे या ना दे, नारी प्यार बरसाती है ...। माता निस्वार्थ प्रेम करती है। इसलिये कुंती को माता कुंती कहते है। माद्री तो बिचारी सती हो गयी। माता कुंती ने अपनी जान उनके पुत्रों पर निछावर कर दी, वह है माता कुंती ! आज भी हम कहते है माता बनना सहज है, लेकिन निभाना कठिन है। जो निभाती है वही महान माता होती है।

<u>प्रश्न :</u> लेकिन कर्ण- कुंती की कथा कुछ अलग है . . . ?

<u>तीजनबाई :</u> कुंती कर्ण की कथा अलग है क्योंकी कर्ण ने कुँवारे गर्भ मे जनम लिया। संसार की निंदा-नालस्ती सें बचने के लिये कुंतीने जीवनभर यह बात छिपा कर रखी। जब कर्ण को बाण लग गये और वह मृत्यूसे झुंजने लगे तो माता कुंती को रहा नहीं गया। क्योंकी लोगों की लोकनिंदा के खातिर अपने पुत्र को पुत्र नहीं माना। लेकिन मरण के पश्चात यह लोकनिंदा का कैसा लागे बंधन ? इसलिये कर्ण सें मिलने निकल पडी। ढूंढने

लगी वह अपने पुत्र कर्ण को और उसको देखकर व्याकुल होकर रोने लगी। तब तक धर्मराज, अर्जुन, नकुल, सहदेव और कृष्ण भी पहुंच चुके। कुंती का रोना देखके पांडवों को दु:ख लग रहा था। कर्ण के माता पिता का कोई ठिकाना नही, वर्णसंकर पुत्र है। और इसके लिये हमारी माँ ममता निछावर क्यों कर रही है ? क्यों आँसू बहा रही है ? लेकिन कृष्ण कहते है-रोने दे, रोने दे --- मनभर रोने दे। अपनी ममता को निछावर करने दे ...!

पांडव बोलते है ---"महाराज, यह क्या बात हुई ? वह हमारे परिवारसे नहीं, वर्णसंकर पुत्र है। हमारी माँ क्यो रो रही ?"

भगवान कहते है, "हमसे क्यो पूछ रहे हो। माँ सें पुछों अपने। पुत्र के लिये ममता क्यों दे रही है।"

धर्मराज पुछतें है, "माँ, तुम इतने आँसू क्यों व्यर्थ बहा रही हो? कौनसे नाता सें रो रही हो?" फिर कुंती रोते रोते कहने लगी, "कर्ण दुसरा कोई नही, मेराही पुत्र है।"

"तुम्हारा पुत्र है ?" धर्मराज व्याकुल होकर बोलते है, "तुमने इतने दिन क्यो नही बताया ? क्यों छिपाकर रखा ?"

"मै भी आज तुमको श्राप देता हूँ , नारी के मन में आज सें एक भी बात गुप्त नही रहेगी। "

प्रश्न : तीजनबाई, पंडवानी कें रुप में कितना बडा धन है आपके पास ! कितने घण्टों की यह पंडवानी कथा है ?

तीजनबाई : सबलसिंग चौहान लिखित 'महाभारत की गाथा' सुनसुनकर महाभारत की कथा और सारे प्रसंग मुझे कंठस्थ हो गये। महाभारत के अठारह पर्व है। पंडवानी पूरी सुनना है तो आपको तीन माह यहाँ रुकना पडेगा।

आजकल लोग तीन दिन, पाँच दिन की पंडवानी पसंद करते है। मेरी जिंदगी है पंडवानी, मेरे प्राण बसे हैं इसमे।

अटारी -पाटन, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ में जन्म लेने वाली तीजन, छिन्द झाडू और चटाई बनाकर पेट भरनेवाली तीजन, आज पंडवानी की पताका बन गयी !

गाँव सें वापस आने का मन ही नही हो रहा था। उनकी हाथ की अंगुठिया सूर्यकिरणों में चमक रही थी। उनकीं देहाती बोली में एक अद्‌भूत खनक थी। उनकी मुस्कराहट में एक तीखी वेदना छिपी थी।

नदी में सूरज डुबने लगा। ये माटी के चोला, रामा ये माटी के चोला ---- चोला माटी के रे --- !

चोला माटी के रामा --- येकर का भरोसा --- चोला माटी के रे----। बहती नदी यही गाना गुनगुना रही थी।

-स्वाती काळे